

## श्री भरत-बाहुबली पूजन

(डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल कृत)

( स्थापना )

( कुण्डलिया )

भरत और बाहुबली, वीतराग-सर्वज्ञ।

हित-उपदेशक लोक में, नमें तुम्हें मर्मज्ञ॥

नमें तुम्हें मर्मज्ञ आतमा के आराधक।

सम्यग्ज्ञानी जीव आतमा के जो साधक॥

अज्ञानीजन अरे आपको ना पहिचानें।

सम्यग्दृष्टि जीव जिनेश्वर तुमको जानें॥१॥

ॐ ह्रीं श्री भरत-बाहुबलिस्वामिनौ अत्र अवतरत-अवतरत संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री भरत-बाहुबलिस्वामिनौ अत्र तिष्ठत-तिष्ठत ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री भरत-बाहुबलिस्वामिनौ अत्र मम सन्निहितौ भवत-भवत वषट्।

( रेखता )

जल

प्रभो ! यह निर्मल जल अम्लान आपके चरणों में अर्पित।

प्यास की बाधा होवे शान्त होय हमको आतम अनुभव॥

भरत-बाहुबलि हे जिनराज ! आपकी महिमा अपरम्पार।

आपने जीते आठों कर्म आप हो गये भवोदधि पार ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री भरतबाहुबलिस्वामिभ्यां जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं  
निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

प्रभो ! शीतल चन्दन अनुपम आपको अर्पण करता हूँ।

कषायों की गर्मी हो शान्त और जीवन में हो संयम॥

भरत-बाहुबलि हे जिनराज ! आपकी महिमा अपरम्पार।

आपने जीते आठों कर्म आप हो गये भवोदधि पार ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री भरतबाहुबलिस्वामिभ्यां संसारतापविनाशनाय चन्दनं नि. स्वाहा।

## अक्षत

अनोखे अक्षत अक्षत हैं आपको करते हम अर्पण।  
अरे अक्षय पद की हो प्राप्ति विकारों का होवे तर्पण॥  
भरत-बाहुबलि हे जिनराज! आपकी महिमा अपरम्पार।  
आपने जीते आठों कर्म आप हो गये भवोदधि पार ॥ ३ ॥  
ॐ ह्रीं श्री भरतबाहुबलिस्वामिभ्यां अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥

## पुष्प

प्रभो ! अत्यन्त मनोहर पुष्प कल्पतरु से हम लाये हैं।  
और होकर हम विषय-विरक्त चरण वन्दन को आये हैं॥  
भरत-बाहुबलि हे जिनराज! आपकी महिमा अपरम्पार।  
आपने जीते आठों कर्म आप हो गये भवोदधि पार ॥ ४ ॥  
ॐ ह्रीं श्री भरतबाहुबलिस्वामिभ्यां कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥

## नेवैद्य

क्षुधानाशक मधुरिम पक्वान्न कहे जाते हैं दुनियाँ में।  
किये सेवन हमने भरपूर क्षुधा न शान्त हुई अबतक॥  
भरत-बाहुबलि हे जिनराज! आपकी महिमा अपरम्पार।  
आपने जीते आठों कर्म आप हो गये भवोदधि पार ॥ ५ ॥  
ॐ ह्रीं श्री भरतबाहुबलिस्वामिभ्यां क्षुधारोगविनाशनाय नेवैद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

## दीप

प्रभो! हो अन्धकार का नाश दीप रत्नों के लाये हैं।  
किन्तु मोहान्धकार का नाश नहीं होता इनसे जग में॥  
भरत-बाहुबलि हे जिनराज! आपकी महिमा अपरम्पार।  
आपने जीते आठों कर्म आप हो गये भवोदधि पार ॥ ६ ॥  
ॐ ह्रीं श्री भरतबाहुबलिस्वामिभ्यां मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥

धूप

सुगन्धित द्रव्यों से निर्मित धूप लेकर हम आये हैं।  
आज तक एक कर्म भी नाश नहीं इससे कर पाये हैं॥  
भरत-बाहुबलि हे जिनराज! आपकी महिमा अपरम्पार।  
आपने जीते आठों कर्म आप हो गये भवोदधि पार ॥ ७ ॥  
ॐ ह्रीं श्री भरतबाहुबलिस्वामिभ्यां अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

मुक्तिफल पाने को हे नाथ! मधुर फल लेकर आये हैं।  
अफल ही सिद्ध हुये ये सभी मुक्ति के न मिल पाने से॥  
भरत-बाहुबलि हे जिनराज! आपकी महिमा अपरम्पार।  
आपने जीते आठों कर्म आप हो गये भवोदधि पार ॥ ८ ॥  
ॐ ह्रीं श्री भरतबाहुबलिस्वामिभ्यां मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

अनर्घपद की आशा से प्रभो! सभी द्रव्यों को शामिल कर।  
अरे यह अर्घ्य बनाकर नाथ! अनेकों बार चढ़ाया है॥  
भरत-बाहुबलि हे जिनराज! आपकी महिमा अपरम्पार।  
आपने जीते आठों कर्म आप हो गये भवोदधि पार ॥ ९ ॥  
ॐ ह्रीं श्री भरतबाहुबलिस्वामिभ्यां अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

( दोहा )

मोक्ष गये युग आदि में, भरत-बाहुबलि नाथ ॥  
उनकी पूजन भक्ति से, जीवन हुआ सनाथ ॥ १ ॥

भरत-बाहुबलि का जीवन देखकर धन्य हो गये हम।  
अरे उनके जैसा जीवन दिखाई दिया हमें न अन्य॥  
अरे वे जब दोनों ही भाई साथ में घर में रहते थे।  
उनमें था अपार स्नेह और थे दो देहों में एक ॥ २ ॥

साथ में खेला करते थे साथ में खाया करते थे।  
कहीं भी जाना हो तो भाई ! साथ में जाया करते थे ॥  
अरे हम दोनों के ही भगत और दोनों के गायक हैं।  
आप दोनों ही भाई नाथ ! अरे हम सबके नायक हैं ॥३॥

आपने बतलाया सबको सभी अपने-अपने नायक।  
न कोई नायक गायक है सभी के सब बस ज्ञायक हैं ॥  
आप जबतक इस घर में रहे अरे अविरतसमदृष्टि रहे।  
यद्यपि थे क्षायिकसमदृष्टि किन्तु अणुव्रत धारण न करे ॥ ४ ॥

क्योंकि अरे शलाकापुरुष कभी अणुव्रत धारण न करें।  
अरे वे जब भी धारण करें महाव्रत ही वे धारण करें ॥  
आप दोनों पौरुष के पिण्ड नहीं थी शक्ति की कोई कमी।  
नहीं थी कोई कमजोरी अरे फिर अणुव्रत क्यों धारें ॥ ५ ॥

आपने जब संयम धारा अरे निज पौरुष के बल से।  
और जब हुये ध्यान में खड़े तो बाहर को झाँके ही नहीं ॥  
भले ही एक वर्ष लग गया बाहुबलि आसन से न डिगे।  
भरत तो अन्तर में जब गये, गये फिर बाहर आये नहीं ॥६॥

अरे इस अद्भुत जोड़ी की होड़ कोई कर सकता नहीं ।  
अरे दोनों भाई बेजोड़ होड़ की बात नहीं कोई ॥  
अरे दोनों पौरुष के पिण्ड अलौकिक संयमधारी थे ।  
कहाँ तक उनकी महिमा करें परम संयम के धारी थे ॥ ७ ॥

आपने किये घातिया नाश आप अरहन्त हो गये हैं ।  
हुये हैं पूर्ण वीतरागी आप सर्वज्ञ हो गये हैं ॥  
आपके द्वारा दुनिया को मिला था हितकारी उपदेश ।  
इसलिये हे जिनवर भगवान ! आप भी थे देवों के देव ! ॥८॥

आठ गुण से मण्डित हे नाथ ! आप जयवन्त हो गये हैं ।  
अनन्तानन्द ज्ञान के पिण्ड सिद्ध भगवन्त हो गये हैं ॥  
अनन्त दर्शन अनन्त वीरज अनन्तानन्त ज्ञानमय आप ।  
सदा सुख भोगेंगे हे प्रभो ! अनन्तानन्त कालतक आप ॥ ९ ॥

( दोहा )

भरत और बाहुबली, होगय भव से पार ।

और हमारा भी प्रभो ! शेष नहीं संसार ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्री भरतबाहुबलिस्वामिभ्यां जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

( सोरठा )

यह असार संसार, अरे आपकी कृपा से ।

हम होंगे भव पार, अल्पकाल में ही प्रभो ॥ ११ ॥

( इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् )

